

प्रेषक,

अमिताभ श्रीवारत्तव,

अपर सचिव,

उत्तरांचल शासन।

सेवा में,

जिलाधिकारी,

जनपद-अल्मोड़ा।

संस्कृति अनुभाग

देहरादून

दिनांक 7 अगस्त, 2004

विषय:—वित्तीय वर्ष 2004-05 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा परिसर में स्व0 श्री सोबन सिंह जीना की आदमकद कांस्य प्रतिमा किये जाने के सम्बन्ध में।

महोदय

उपर्युक्त विषयक मा0 मुख्यमंत्री कार्यालय अनु0-3 के कार्यालय-ज्ञाप संख्या-एफ—230/मु0मं0का0/2003 दिनांक 16 अक्टूबर, 2003 के संन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि मा0 मुख्यमंत्री जी की घोषणा के अनुरूप कुमायूँ विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा परिसर में स्व0 श्री सोबन सिंह जीना की आदमकद कांस्य प्रतिमा स्थापित किये जाने हेतु श्री राज्यपाल महोदय, टी0ए0सी0/वित्त विभाग द्वारा परीक्षणोंपरांत 9.6 फीट की कांस्य प्रतिमा स्थापित किये जाने हेतु रु03.76 लाख (रुपये तीन लाख छियत्तर हजार मात्र) तथा रमारक हेतु पैडस्टल निम्नोण के हेतु रु0 1.24 लाख कुल रु0 5.00 लाख (रुपये पांच लाख मात्र) की धनराशि को आहरित कर व्यय करने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं।

2—उक्त धनराशि रु0 5.00 लाख का आहरण मा0 मुख्यमंत्री अनु0-3 के कार्यालय ज्ञाप दिनांक 16 अक्टूबर, 2003 में उल्लिखित मानक मद से किया जायेगा एवं कार्यालय ज्ञाप में उल्लिखित अन्य शर्तों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। एवं धनराशि इस शर्त के अधीन स्वीकृत की जाती है। कि इसके उपरांत योजना में कोई पुनरीक्षण अनुमन्य नहीं होगा।

3—यहां यह भी स्पष्ट किया जाता है कि धनराशि का आवंटन किसी ऐसे व्यय को करने का अधिकार नहीं देता जिसे व्यय करने के लिये वित्तीय हस्तपुस्तिका के नियमों या अन्य आदेशों के अधीन व्यय करने से पूर्व सक्षम अधिकारी की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है। ऐसा व्यय सक्षम अधिकारी की स्वीकृति प्राप्त किया जाना आवश्यक है। व्यय करते सम्बन्धित की स्वीकृति प्राप्त कर ही किया जाना चाहिये। व्यय में मितव्ययता नितान्त आवश्यक है। व्यय करते समय मितव्ययता के सम्बन्ध में समय-समय पर जारी किये गये शासनादेशों में निहित निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय।

4—आगणन में उल्लिखित दरों का विश्लेषण विभाग के अधीक्षण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता द्वारा स्वीकृत/अनुमोदित दरों को जो दरें शिडयूल आफ रेट में स्वीकृत नहीं है, अथवा बाजार भाव से ली गई हो, की स्वीकृत नियमानुसार अधीक्षण अभियन्ता को अनुमोदन आवश्यक होगा।

5—आगणन में जिन मदों हेतु जो राशि स्वीकृति की गयी है, उसी मद पर व्यय किया जाए, एक मद का दूसरी मद में व्यय कदापि न किया जाए। स्वीकृति धनराशि के उपरांत लागत में कोई भी पुनरीक्षण किसी भी दशा में अनुमन्य नहीं होगा।

- 6- कार्य पर उतना ही व्यय किया जाय जितना कि स्वीकृत नार्म है, स्वीकृत नार्म से अधिक व्यय कदापि न किया जाय। एक मुश्त प्राविधान को कार्य करने से पूर्व विस्तृत आगणन गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है।
- 7- कार्य कराने से पूर्व समस्त औपचारिकताएं तकनीकी दृष्टि के मध्य नजर रखते एवं लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रचलित दरों/विशिष्टियों के अनुरूप ही कार्य को सम्पादित कराते समय पालन करना सुनिश्चित करें।
- 8- निर्माण सामग्री को प्रयोग में लाने से पूर्व किसी प्रयोगशाला से टैस्टिंग करा ली जाय, तथा उपयुक्त पायी जाने वाली सामग्री को प्रयोग में लाया जाय।
- 9- वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पूर्व उपयोगिता प्रमाण पत्र जिलाधिकारी द्वारा अवश्य उपलब्ध करा दिया जाय।
- 10- यह आदेश अशा0 सं0- 452/2004, वित्त अनु-2 दिनांक 05 अगस्त, 2004 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय

(अमिताभ श्रीवास्तव)
अपर सचिव।

पृप0 संख्या- /2004- संस्कृति/2003, तददिनांकित।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

- 1- महालेखाकार, उत्तरांचल, ओबराय बिल्डिंग, सहारनपुर रोड, देहरादून।
- 2- वरिष्ठ कोषाधिकारी, देहरादून। अल्मोड़ा।
- 3- निजी सचिव, मा0 मुख्यमंत्री जी उत्तरांचल।
- 4- अपर सचिव, मा0 मुख्यमंत्री जी को मा0 मुख्यमंत्री कार्यालय अनु0-3 के कार्यालय ज्ञाप दिनांक 16 अक्टूबर, 2003 के क्रम में।
- 5- जिलाधिकारी, अल्मोड़ा।
- 6- अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा, अल्मोड़ा।
- 7- श्री एल0एम0 पन्त, अपर सचिव, वित्त, उत्तरांचल शासन।
- 8- एन0आई0सी0 सचिवालय परिसर।
- 9- वित्त अनुभाग-2,
- 10- मर्ड फाईल।

भवदीय

(अमिताभ श्रीवास्तव)
अपर सचिव।